समकालीन भारत में आतंकवाद का " आंतरिक सुरक्षा " पर प्रभाव

1. INTRODUCTION :-

आतंकवाद समकालीन युग की सर्वाधिक ज्वलंत समस्या है। दुनिया का कोई भी देश ऐसा नहीं है , जो इस समस्या से ग्रसित न हो। पिछले कुछ दशकों में इसका दायरा निरन्तर बढ़ता जा रहा है और आज यह सुरसा के मुंह की तरह विभिन्न रूपों में फैल रहा है। आतंकवाद को भिन्न-भिन्न रूप से परिभाषित किया जाता है यहां तक कि आज भी सभी देश इसकी किसी एक परिभाषा पर सहमत नहीं है। सामान्य रूप में जब भी किसी व्यक्ति अथवा संगठन के द्वारा अपनी (उचित अथवा अनुचित) बात को मनवाने के लिए अवांछित साधनों - बल प्रयोग, शास्त्रास्त्रों, हिंसा आदि का प्रयोग किया जाता है, आंतकवाद कहलाता है। समस्यात्मक प्रश्न यह उठता है कि जिन हिंसात्मक गतिविधियों को कुछ देशों के द्वारा आतंकवाद कहा जाता है ? उन्हें कट्टरपंथी मुसलमान जेहाद, फिलिस्तीन व कश्मीर जैसे भू-भागों को स्वतंत्र देश बनाने की तमन्ना रखने वाले 'स्वतंत्रता की लड़ाई अमेरिकी अहम के विरोधी 'उत्पीडन व शोषण के विरूद्ध संघर्ष तथा तटस्थ सोच वाले 'क्रिया की प्रतिक्रिया' कहते हैं।

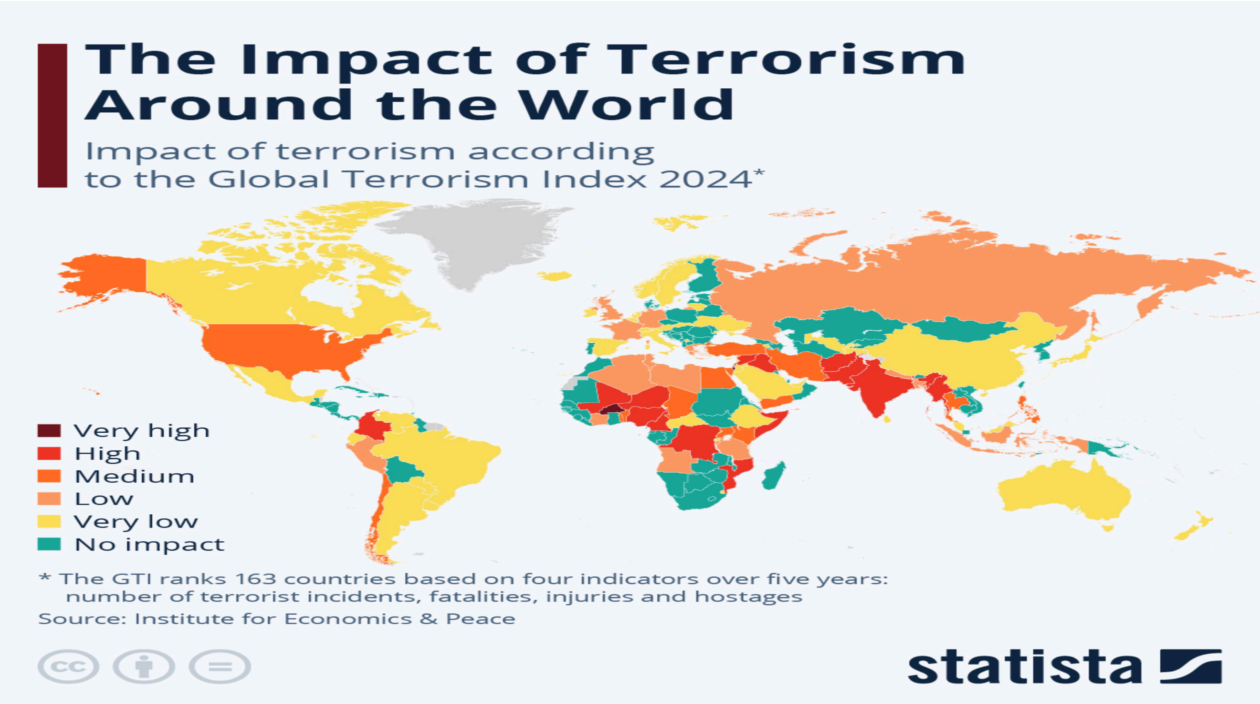

आतंकवाद का अभिप्राय उन आपराधिक कृत्यों से है, जो किसी राज्य के विरुद्ध उन्मुख हों और जिनका उद्देश्य कुछ विशिष्ट लोगों या जनमानस में भय या आतंक पैदा करना है। आतंकवाद व्यक्तियों के बीच की लड़ाई नहीं है, अपितु वह सामाजिक समूहों एवं राजनीतिक शक्तियों के बीच संघर्ष है।

आतंकवाद का शिकार सरकारी तंत्र तो है ही,आम जन भी बुरी तरह से प्रभावित है और इसे एक आपदा के रूप में देख रहा है। आतंकवाद आज ऐसी समस्या के रूप में स्थापित हो चुका है, जो मानव जाति पर कभी भी, कहीं भी कहर बनकर टूट सकता है, कहने का तात्पर्य है कि चंद स्वार्थी लोगों व उनके संगठनों ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंसा को अपना माध्यम बनाया है।

'आतंकवाद' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'आतंक' और 'वाद'। 'आतंक' का अर्थ है 'भय' और 'वाद' का अर्थ है 'विचार अथवा सिद्धांत' ।' **आतंकवाद का सर्वप्रथम प्रयोग बुसेल्स में दंड विधान को समेकित करने के लिए 1931 में बुलाये गये तीसरे सम्मेलन में किया गया था।** जिसके अनुसार आतंकवाद का अभिप्राय **"जीवन भौतिक अखंडता अथवा मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालने वाला या बड़े पैमाने पर सम्पति को हानि पहुँचाने वाला कार्य करके जानबूझ कर भय का वातावरण उत्पन्न करना आतंकवाद है।"**आतंकवाद शब्द फ्रांसीसी क्रान्ति के समय **'रेन ऑफ टेरर' (Reign of terror)** के सन्दर्भ में अभिलिखित किया गया था। उस समय आतंक को एक राजनीतिक युक्ति की तरह प्रयोग किया जाता था। **'टेरर' (Terror)** शब्द **लेटिन भाषा** का है और इसका अर्थ है **'डराना अथवा भयभीत करना'।"**

जैकिन्स का मत है कि "आतंकवाद में भय प्रचारित करना तथा हिंसक गतिविधियों को क्रियाशील रखना निहित होता है।"

श्वर्जर बर्गर ने लिखा है कि, "आतंकवाद भय पैदा करने के उद्देश्य से शक्ति का प्रयोग करना या इस प्रकार अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है।" अतः उपर्युक्त परिभाषाओं से आतंकवाद को संक्षिप्त मे कुछ इस प्रकार से समझा जा सकता है -

आतंकवाद

आ- आडम्बर, आगजनी, अत्याचार।

तं - तोडफोड़ करना।

क- कुंत्सित विचार।

वा- विस्फोट करना।

द- दहशत फैलाना।

1.1भारत मे आतंकवाद :- भारत में विगत दो दशकों से किसी न किसी रूप में आतंकवाद पंख पसार रहा है, भारत-पाकिस्तान बंटवारें समय से ही इसका प्रत्यक्ष अनुभव देश को हुआ, परन्तु अस्सी के दशक तक तो पाक प्रायोजित आतंकवाद पंजाब में कहर का कारण ही बन बैठा एवं नब्बे के दशक में यह जम्मू कश्मीर इत्यादि विभिन्न प्रान्तों में व्याप्त हो गया। धीरे-धीरे इसे धार्मिक आवरण ओढ़ानें का प्रयास किया गया, जिसे जेहादी आतंकवाद का नाम दिया गया इस

आतंकवाद के साथ-साथ भारत में हिंसात्मक आन्दोलन नक्सलवाद के रूप में उभरा, जो धीरे-धीरे पश्चिमी बंगाल, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र में अपनी पैंठ बनाने के साथ-साथ अन्य राज्यों में भी दस्तक देने लगा है। आतंकवाद का एक अन्य रूप अलगावादी परिप्रेक्ष्य में पूर्वोत्तर राज्यों जैसे- मणिपुर, मिजोरम, असम, नागालैण्ड, त्रिपुरा आदि में परिलक्षित हुआ है।

1.2 भारत में आतंकवादी संगठन :-

कश्मीर ऐसा राज्य है, जहाँ वर्तमान में दो सौ से भी अधिक आतंकवादी संगठन काम कर रहे हैं जिनमें **हिजबुल मुजाहिदीन,** भारत में आतंकवाद का व्यवस्थित रूप से आरम्भ हम जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित गतिविधियों से मानते हैं किन्तु इसके पीछे अप्रत्यक्ष रूप से उस समय की विश्व की दो ध्रुवीय शक्तियों एवं उनकी असीम महत्वाकांक्षाएं थीं, जो सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर रही थी। अमेरिका का एशिया में अपनी धाक जमाने एवं प्राकृतिक संसाधनों पर एकाधिकार करने हेतु रणनीति अपनाना, आतंकवाद के विस्तार में पहला चरण था. अपनी इस रणनीति के तहत यू०एस०ए० ने अफगानिस्तान में हस्तक्षेप आरम्भर किया, किन्तु उसे एशिया में अपने स्थायी केन्द्र की आवश्यकता थी, इसीलिए उसने पाकिस्तान को चुना और उसे आर्थिक सहायता देना आरम्भ किया पाकिस्तान ने इस सहायता को भारत के विरुद्ध प्रयोग करना आरम्भ किया, जिसकी परिणति हम जम्मू कश्मीर में आतंकवाद की भयावहता के रूप में देख सकते हैं। **लश्कर-ए-तैयबा,जैश-ए-मुहम्मद,अल-बदर तारीक अल मुजाहिदीन, जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट आदि प्रमुख है** आदि जम्मू कश्मीर में आतंकवादी धर्म एवं जेहाद के नाम पर वहाँ की भोली भाली जनता को भड़का रहे है. जिससे कि धार्मिक आतंकवाद फैल रहा है, धर्म के नाम पर कश्मीर की स्वतंत्रता के नाम पर यहाँ आतंकवादी हिंसात्मक कार्यवाहियों को अंजाम देते रहते है, जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट था, एक सैनिक संगठन था, इसका मुख्यालय ब्रिटेन में था, बाद में ये शाखाएं फ्रांस, हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका एवं मध्य एशिया के चारों देशों में खुल गई, पाकिस्तान इसकी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा। जिसने भारत में सबसे ज्यादा अपनी गतिविधियों को अंजाम दिया। सीमा पर आंतक को पाकिस्तान द्वारा सहायता दिए जाने के कारण भारत व पाक में तनाव ही पैदा हो रहा है जिसके कारण आपसी विश्वास में कमी आ रही है।

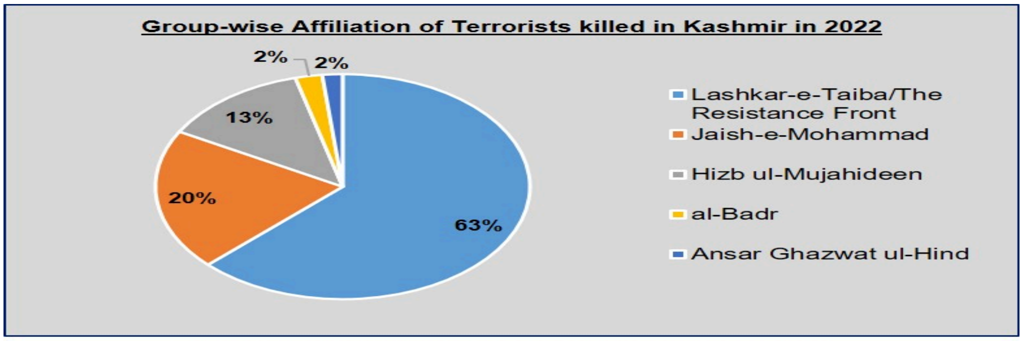

Chart 4. Group-wise Affiliation of Terrorists killed in Kashmir in 2022
(Source: Twitter/Kashmir Zone Police)

वर्तमान में विश्व के मानचित्र पर पाक के आतंकवादी संगठन प्रमुख रूप से अंकित हो गए है यह भारत ही नहीं विश्व की समस्या है, क्योंकि विश्व में आतंकवाद की जड़े कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में पाक से जुड़ जाती है।

पंजाब में आतंकवाद पृथक खालिस्तान की मांग को लेकर शुरू हुआ, जिसने देश की शांति व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। पंजाब में **खालिस्तान** की मांग 1970 के आसपास उठने लगी और 1980 में अपने चरम पर आ पहुँची, पंजाब में पृथकतावादी आन्दोलन के बीज ज्ञान बख्तार सिंह के द्वारा बोए गए थे, जो बिरलीधन के एक नक्सलवादी समर्थक नेता थे बख्तार सिंह ब्रिटेन स्थित शिरोमणि अकाली दल के खालिस्तान समर्थक गुट के नेता थे। भिण्डर वाला के अलावा जगजीत सिंह ने इस आन्दोलन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाया एवं अलग खालिस्तान की मांग कर इस समस्या को नया मोड़ दिया इसी तरह पंजाब में आतंकवादी घटनाएँ बड़ी और इसी के चलते 31 अक्टूबर 1984 को प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या कर दी गयी। 1985 के बाद यह फिर से जोर पकड़ने लगा स्वर्ण मंदिर पर फिर से नियंत्रण करने का प्रयास किया गया राष्ट्रीय सुरक्षा बल के जवानों द्वारा **'ऑपरेशन थंडर-2'** नामक ऑपरेशन चलाया गया इससे कुछ समय के लिए सिख आतंकवाद ढीला पड़ गया, लेकिन 1989 में आतंकवादी कार्यवाहियों में अचानक वृद्धि हो गई तथा हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली आदि में इसका प्रभाव दिखाई दिया जाने लगा किन्तु वर्तमान समय में यहाँ शांति स्थापित है और खालिस्तान की मांग को उठाने वाले आतंकवादी अन्य देशों में जा बसे हैं।

भारत में आतंकवाद की भयावहता हमें उत्तर-पूर्व में स्थापित राज्यों में देखने को मिलती है. असम में कुल 25 आतंकवादी संगठन है, जिनके माध्यम से असम में आज आतंकवाद फैल रहा है यहाँ समय-समय पर अलग राष्ट्र की मांग उठने लगी है। असम में विदेशियों को बाहर निकालने की मांग आँसू नामक एक संगठन ने की जब आँसू की मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो इसके कार्यकर्ता हिंसा पर उतर आए। असम में यही से हिंसा उत्तरोत्तर बढ़ती ही चली गई इसी हिंसा को अन्य संगठनों ने भी बढ़ावा दिया 'आँसू' के बाद 1987 में '**बोडो**' नामक चरमपंथी संगठन की मांग थी कि असम को शेष भारत से अलग करके स्वतंत्र राज्य बनाओ इसी से असमियों में क्षेत्रवाद की भावना घर कर गई 'अखिल बोडो छात्रसंघ' ने हिंसा के नए मानदण्ड स्थापित किए इसने आदिवासी, गैर आदिवासी आधार पर ही असम को बांटने की मांग उठाई जिससे हिंसा और अधिक तीव्र हो गई. इसी समय **'उल्फा'** के नए संगठन को प्रभाव बढ़ता चला गया असम की आतंकवादी गतिविधियों में मणिपुर आतंकवादी संगठन आकर जुड़ गए रि 4/8 मत है कि हमारी संस्कृति व भाषा भी अलग है और न हमारा आर्थिक विकास हुआ है इसालए हम भारत से अलग रहकर सुखी जीवन की कल्पना कर रहे है। मणिपुर के संगठन है- यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट आदि मेघालय के आतंकवादी संगठनों **(पीपल्स लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ मेघालय, हिनीट्रेज नेशनल लिबरेशन काउन्सिल** आदि) का मानना है कि केन्द्र हमारी समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रहा है, इसीलिए समय-समय पर यह संगठन हिंसात्मक कार्यवाही करने से भी नहीं हिचकिचाते।

असम, मेघालय, त्रिपुरा आदि में बांग्लादेशियों की संख्या काफी मात्रा में है जिसके कारण वहाँ अशांति का जन्म हो रहा है। मिजोरम की जनता में भी अलगावाद की भावना पाई जाती है, मिजोरम की तरह नागालैण्ड भी अषांत है। 1970 के आसपास आतंकवाद की शुरूआत हुई वहाँ **नागा'** जाति के लोग बहुतायत में है नागा' के विद्रोह की शुरूआत देश की आजादी के समय से हुई अंग्रेजों ने इन्हें लड़ाकू जाति के रूप में समर्थन दिया बाद में पाकिस्तान में आई०एस०आई० के माध्यम से नागाओं को हथियारों की आपूर्ति की गई जो अभी तक जारी है इन विद्रोहियों का वैचारिक रूप से वामपंथियों से जुड़ाव होने के कारण चीन व म्यांमार से मदद मिलती है, इसकी कमान **नागा नेशनल काउन्सिल (एन०एन०सी०) एवं नेशनल सोशलिस्ट काउन्सिल ऑफ नागालैण्ड (एन०एस०सी०एन०)** ने अपने हाथ में ले ली यहाँ सैनिक एवं राजनीतिक दो प्रकार से शाखाएं काम कर रही है। ये लक्षण भारत से अपने आपको पृथकतावादी सोच के कारण पैदा हुए जिसमें भारत सरकार की पूर्णतः उपेक्षा की गई थी।

त्रिपुरा में 1980 के आसपास आतंकवाद की शुरूआत हुई, जब त्रिपुरा के आदिवासी कबीलों ने गैर-कबीलाई लोगों को त्रिपुरा से बाहर खदेड़ना शुरू कर दिया, त्रिपुरा के आतंकवादी संगठन **त्रिपुरा डिफेंस फोर्स, नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ त्रिपुरा** आदि है, "राजनीतिक आर्थिक एवं पिछड़ेपन के कारण इस क्षेत्र का अधिकांश युवा वर्ग नशीली दवाओं का अभ्यस्त हो चुका है, जिसके कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है नषीली दवाओं का धंधा करने वाले व्यक्ति अपने निहित स्वार्थ के लिए आतंकवाद को बढ़ावा देते है, त्रिपुरा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा आदि संगठनों की मांग है कि यह क्षेत्र स्थानीय लोगों का है माओवाद की गिरफ्त में भारत के ओडिशा,असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, आन्ध्र प्रदेश है जो मात्र हिंसा की ही बोली बोलते है माओवादी अपनी सता स्थापित करने में लालायित है जिस कारण ये स्वयं को राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में सफल रहे है।

भारत में नक्सलवाद के रूप में फलीभूत हो रहे आतंकवाद को चीन समर्थन दे रहा है वह अरूणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार जमाना चाहता है पाक एवं चीन भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने हेतु भरसक प्रयासरत है। विभिन्न विचारधाराओं धर्म आदि को आधार बनाकर भारत को खण्डित करना चाहते हैं।

1.3 भारत मे हुए प्रमुख आतंकवादी हमले :-

कोयम्बटूर धमाका : 14 फरवरी 1998 में इस्लामिक ग्रुप अल उम्माह ने कोयंबटूर में 11 अलग-अलग जगहों पर 12 बम धमाके किए। इसमें 60 लोगों की मौत हो गई, जबकि 200 लोग घायल हुए थे। **जम्मू कश्मीर विधानसभा पर हमला :** 1 अक्टूबर 2001 को भवन जैश ए मोहम्मद ने 3 आत्मघाती हमलावरों ने विधानसभा भवन पर कार बम हमला किया। इसमें 38 लोग मारे गए।**भारतीय संसद पर हमला :** 13 दिसंबर 2001 में लश्करे तैयबा और जैश मोहम्मद के 5 आतंकवादी भारत के सबसे सुरक्षित माने जाने वाले संसद भवन परिसर में घुस गए। हालांकि सुरक्षा बलों ने आतंकियों को मार गिराया और आतंकी अपने मंसूबे में नाकाम हो गए। हमले के समय संसद भवन में 100 राजनेता मौजूद थे। इस हमले में 6 पुलिसकर्मी और 3 संसद भवन कर्मी मारे गए। **अक्षरधाम मंदिर पर हमला :** 24 सितंबर 2002 में लश्कर

और जैश ए मोहम्मद के 2 आतंकी मुर्तजा हाफिज यासिन और अशरफ अली मोहम्मद फारूख दोपहर 3 बजे अक्षरधाम मंदिर में घुस गए। इनके हमले में 31 लोग मारे गए जबकि 80 लोग घायल हो गए थे। **मुंबई ट्रेन धमाका :** 11 जुलाई 2006 में मुंबई की लोकल ट्रेनों में अलग-अलग 7 बम विस्फोट हुए। सभी विस्फोटक फर्स्ट क्लास कोच में बम रखे गए थे। इन धमाकों में इंडियन मुजाहिदीन का हाथ था। इसमें कुल 210 लोग मारे गए थे और 715 लोग जख्मी हुए थे। **जयपुर विस्फोट :** गुलाबी नगरी जयपुर में 13 मई 2008 में 15 मिनट के अंदर 9 बम धमाके हुए। इन धमाकों में कुल 63 लोग मारे गए थे जबकि 210 लोग घायल हुए थे। **इंफाल में 21 अक्टूबर, 2008** को मणिपुर पुलिस कमांडो परिसर पर हुए हमले में 17 लोगों की मौत हो गई। **असम में धमाके :** राजधानी गुवाहाटी में 30 अक्टूबर 2008 को विभिन्न जगहों पर कुल 18 धमाके आतंकियों द्वारा किए गए। इन धमाकों में कुल 81 लोग मारे गए जबकि 470 लोग घायल हुए।

26/11 मुंबई आतंकी हमला : 26 नवंबर, 2008 को पाकिस्तान से आए 10 आत्मघाती हमलावरों ने सीरियल बम धमाकों के अलावा कई जगहों पर अंधाधुंध फायरिंग की। आतंकियों ने नरीमन हाउस, होटल ताज और होटल ओबेराय को कब्जे में ले लिया था। इस हमले में करीब 180 लोग मारे गए थे और करीब 300 लोग घायल हुए थे। आतंकवादी कसाब पकड़ा गया था, जिसे मुकदमे के बाद फांसी दे दी गई। **पठानकोट हमला :** 2 जनवरी को 2015 को पठानकोट एयरबेस पर 7 पाकिस्तानी आतंकवादियों हमला कर कई लोगों को घायल कर दिया जिसमें 7 जवान शहीद हो गए। **गुरदासपुर हमला :** पाकिस्तान की सीमा से महज 10-20 किलोमीटर दूर पंजाब के गुरदासपुर में 27 जुलाई 2015 को बड़ा आतंकी हमला हुआ। हमले में गुरदासपुर के SP डिटेक्टिव बलजीत सिंह सहित 4 जवान शहीद हो गए थे। पाकिस्तान से आए आतंकियों ने सबसे पहले जम्मू जा रही बस को निशाना बनाया और फिर दीनानगर पुलिस थाने में घुस गए। वहां उन्होंने अंधाधुध फायरिंग की। 11 घंटे चली लड़ाई में कुल सात लोगों की जान चली गई और 3 आतंकवादी मारे गए। **18 सितंबर 2016 में जम्मू-कश्मीर के उड़ी सेक्टर** में सेना के कैंप पर हुए भीषण आतंकवादी हमले ने पूरे देश को दहला दिया। इस हमले में कम से कम 20 सैनिक शहीद हो गए और कई सैनिक घायल हो गए।**भारत में नक्सलवाद के हालिया हमलों में 2017** में छत्तीसगढ़ के सुकमा में हुआ था जब सीआरपीएफ के 25 जवान शहीद हो गए थे। **पुलवामा हमला:** 14 फरवरी 2019 को आतंकवादी हमला हुआ था, जब जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारतीय सुरक्षा बलों को ले जा रहे थे पूर्वी जम्मू और कश्मीर राज्य के शहीद जिलों के लेथपोरा में एक वाहन-जनित आत्मघाती हमलावर ने हमला कर दिया था। इस हमले में भारतीय केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 40 जवान शहीद हो गए थे। हमलों की जिम्मेदारी पाकिस्तान स्थित इस्लामिक कट्टरपंथी समूह जैश-ए-मोहम्मद ने ली थी।

2.<u>OBJECTIVES :-</u>

स्वतंत्रता के पश्चात् आज भारत आधी शताब्दी का सफर तय कर 21वीं सदी की चौखट पार कर चुका है। देश आज एक जीवन्त, उन्नति की ओर अग्रसर राष्ट्र के रूप में गतिमान है। लगभग पिछले पांच दशकों के कालखण्ड में भारत की

राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष अनेक संकट उत्पन्न हुये हैं। तमाम अन्तर्विरोधों, तनावों, विविधताओं के बावजूद भारत का लोकतांत्रिक ढांचा अविचल रहा किंतु आज सर्वतोप्रमुख आतंकवाद ऐसा नासूर है जिसने हमारे देश की अखण्डता पर आघात किया है।

इस विषय पर अध्ययन का उद्देश्य भारतीय संदर्भ में आतंकवाद के कारणों का पता लगाना है कि कैसे **सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक** कारणों के अलावा **आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति**, **आधुनिक प्रौद्योगिकी** के प्रभाव ने व वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत में आतंकवाद की नवीन पृष्ठभूमि तैयार कर दी है। विभिन्न राज्यों में उत्पन्न आतंकवाद व नक्सली आतंकवाद का विश्लेषण करना,साथ ही भारत पर पड़ने वाले प्रभाव व परिणामों का आकलन करना है। किस प्रकार हम यह तय करें कि हमारा गन्तव्य क्या हो? भविष्य क्या हो? भारत में आतंकी गतिविधियों को रोकने हेतु वैधानिक उपायों, प्रभावी रणनीति के लिये सुझाव देना, साथ ही यह भी विचार मंथन करना कि **"आंतरिक सुरक्षा"** को किस प्रकार प्रभावी तरीके से कायम रखा जा सकता है।

3.RESEARCH QUESTIONS :-

- ❖ भारत में सक्रिय प्रमुख आतंकवादी समूह कौन से हैं? उनके उद्देश्य तथा विचारधाराएं क्या हैं?
- ❖ आतंकवाद भारतीय समाज के सामाजिक ताने-बाने और सांप्रदायिक सद्भाव को कैसे प्रभावित करता है?
- ❖ भारत के भीतर आतंकवाद के खतरे को कम करने में वर्तमान आतंकवाद विरोधी उपाय और रणनीतियाँ कितनी प्रभावी हैं?
- ❖ आतंकवाद का मुकाबला करने के उद्देश्य से सरकारी नीतियां और पहल नागरिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों को कैसे प्रभावित करती हैं?

4. RESEARCH HYPOTHESIS :-

- ❖ भारत में आतंकवादी हमलों की बढ़ती आवृत्ति और गंभीरता का आंतरिक सुरक्षा पर महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे सामाजिक-राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक व्यवधान और शासन संस्थानों में जनता के विश्वास में कमी आती है।
- ❖ वर्ष 2019 में धारा 370 और 35A हटने के पश्चात जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा स्थिति में सुधार हुए हैं।
- ❖ पिछले वर्ष भारतीय गृह मंत्रालय कि तरफ से यह दावा किया कि वर्ष (2004-2014) और वर्ष (2014-2023) के बीच जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की घटनाओं में 70%, नागरिकों की मौत में 72% तथा सुरक्षा बल कर्मियों की मौत में 59% की गिरावट देखी गई।

5. RESEARCH METHODOLOGY :-

प्रस्तुत लघु शोध का अध्ययन मुख्य रूप से वर्णात्मक तथा विषलेषणात्मक अनुसंधान विधि के साथ -साथ समसामयिक घटनाओं पर आधारित है।यह लघु शोध प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों स्त्रोतों पर आधारित है , जिसमे विभिन्न पुस्तकों , लेखों , समाचार पत्रों (The Indian Express , Punjab Kesari, The Hindu) तथा कुछ प्रमुख आधिकारिक INTERNET SITES (SIPRI , statista , Twitter ,Wikipedia) सम्मिलित है। समस्त घटनाओं का उल्लेख तथ्यों पर आधारित है,जिससे किसी प्रकार की भ्रान्ति एवं जनाक्रोश को बढ़ावा न मिले। इसमें राजनीतिक व सामाजिक तथ्यों का विशिष्ट विश्लेषण किया गया है,जिसमें वैचारिक पूर्व धारणा के विषय भी शामिल है। पूर्णतः विश्लेषणात्मक होने के कारण शोध के परिणामस्वरूप ऐसे तथ्यगत निष्कर्ष निकले हैं जो समरूप समाजों के लिये उपयोगी हो सकते हैं।

6.REVIEW OF LITERATURE :-

आतंकवाद भारत के लिए लगातार एक चुनौती बना हुआ है, जो दशकों से इसके आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य को प्रभावित कर रहा है। देश ने अलगाववादी आंदोलनों, धार्मिक उग्रवाद और विद्रोह सहित आतंकवाद के विभिन्न रूपों का सामना किया है, जिसका प्रभाव जान-माल के नुकसान से लेकर सामाजिक और आर्थिक व्यवधान तक हुआ है। इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य उन विद्वतापूर्ण कार्यों की जांच करना है जो समकालीन भारत में आंतरिक सुरक्षा पर आतंकवाद के बहुमुखी प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं।

बुस होपमन, इन्साइड टेर्ररिज्म, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, 2006 यह रचना न केवल आतंकवाद के ऐतिहासिक विस्तार बल्कि आतंकवादियों की दिमागी मानसिकता को समझने का एक प्रयास है। इसमें नयी प्रेरणाओं, उन नई रणनीतियों पर चर्चा करते हैं जो हाल ही के वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद में दिखायी पड़ती है। साथ ही आतंकवाद के आज व कल के बारे में, धार्मिक व राजनीतिक आतंकवाद के मध्य स्पष्टतापूर्वक भेद करते हुए धार्मिक आतंकवाद की उत्पत्ति पर भी विस्तार से प्रकाश डालते हैं। **टोरे बीजोरगो, रूट कॉजेज ऑफ टेररिज्म 'मिथ्स रियलिटी एंड वेज, रूटलज प्रकाशन, 2005** यह पुस्तक आतंकवाद की उत्पत्ति के प्रमुख कारणों, उन स्थितियों का वर्णन करती है जो इसे बढ़ाने में सहायक है। इसमें प्रजातांत्रिक असंतुलन, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, आतंकवाद व मीडिया संबंधों, आतंकवाद के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पहलुओं, फिलीस्तीन, मध्यपूर्व, लेटीन अमरीकी, यूरोप में क्रांतिकारी आतंकवाद के समाप्ति हेतु ठोस उपायों पर भी दृष्टिपात करती है। साथ ही राज्य प्रायोजित आतंकवाद पर विस्तार से चर्चा करती है। **जगमोहन, माइ फ्रोजन टर्बुलेंस इन कश्मीर, एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड,** इस पुस्तक में आतंकवाद के बर्बर चेहरे, इसके क्षति पहुंचाने के तरीकों व इसकी प्रकृति को विविधता से चित्रित किया गया है। आशावादी सोच के धनी लेखक का मंतव्य है कि कश्मीर में परिवर्तन केवल नयी दृष्टि, यथार्थताओं के प्रति गहरी अंतर्दृष्टि के साथ केवल भारत द्वारा ही लाया जा

सकता है। इसमें अनुच्छेद 370, भारत-पाक वार्ता, भारतीय संसद पर हमला आदि घटनाओं के बावजूद नये संकल्पों को सजाया गया है। **वेद व्यास, टेर्ररिज्म इन नर्दन इंडिया जम्मू कश्मीर एंड पंजाब, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2010** यह पुस्तक जम्मू कश्मीर व पंजाब के विप्लवों का तथ्यपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें कश्मीर सरीखे सीमावर्ती राज्य में फैलाये गये विद्रोहों के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। जम्मू कश्मीर में कार्यरत आतंकी समूहों का वर्णन वजम्मू-कश्मीर की वर्तमान स्थिति का वर्णन भी इसमें है। पंजाब व कश्मीर के सिख व इस्लामी समूहों के प्रति भारत के समझौतावादी रूख को समझते हुए भी प्रेरणा यही दी गयी कि समय कुछ कठोर फैसलों को क्रियान्वित करने का है। भारत में आतंकवादी हमलों के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण मानव क्षति और मनोवैज्ञानिक आघात हुआ है। **एस के शर्मा (2017) और केएम सिंह (2014) के अध्ययन मानव सुरक्षा आयाम पर ध्यान केंद्रित करते हैं,** जो प्रभावित समुदायों पर भावनात्मक और सामाजिक प्रभावों पर चर्चा करते हैं। वे मनोसामाजिक समर्थन और सामुदायिक लचीलापन-निर्माण उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।**अमित कुमार (2019) के अध्ययन आतंकवाद, आर्थिक विकास और गरीबी के बीच संबंधों का पता लगाते हैं,** अंतर्निहित शिकायतों को दूर करने के लिए समावेशी विकास के लिए रणनीतियों का सुझाव देते हैं। **सी. क्रिस्टीन फेयर का काम (2014) "फाइटिंग टू द एंड: द पाकिस्तान आर्मीज वे ऑफ वॉर"** पाकिस्तान जैसे राज्य अभिनेताओं के रणनीतिक व्यवहार और भारत की आंतरिक सुरक्षा पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है। **जसजीत सिंह का शोध (2009) "काउंटर-टेररिज्म: द इंडियन एक्सपीरियंस"** भारत के आतंकवाद विरोधी ढांचे का मूल्यांकन करता है, ताकत और कमजोरियों पर प्रकाश डालता है।

7.RELEVANCE OF THE STUDY :-

विभिन्न आतंकवादी संगठनों द्वारा उत्पन्न खतरे के कारण समकालीन भारत में आंतरिक सुरक्षा पर आतंकवाद के प्रभाव का अध्ययन अत्यधिक प्रासंगिक है। आतंकवाद की गतिशीलता को समझने से नीति निर्माताओं को प्रभावी आतंकवाद विरोधी रणनीति विकसित करने, नागरिकों की सुरक्षा करने और स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, यह आतंकवाद के सामाजिक-राजनीतिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर प्रकाश डालता है, भविष्य के हमलों की रोकथाम और शमन में सहायता करता है। कुछ तरीके, जो इस संबंध में भारत सरकार के लिए सहायक हो सकते हैं -

- ❖ मजबूत एवं सतर्क खुफिया तंत्र की स्थापना ।
- ❖ पाकिस्तान जैसे आतंक के प्रायोजक देशों पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव डलवाना।
- ❖ राजनीतिक एवं नागरिक जागरूकता तथा दायित्वों का ईमानदारी व निष्ठापूर्वक निर्वाह करना।
- ❖ पकड़े गये आतंकवादियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाना।
- ❖ सीमापार आतंकवाद से निपटने के लिए सेनाओं की विशेष तैयारी एवं विशेष निगरानी तंत्र की स्थापना।

- आतंकवाद के विरुद्ध कार्यवाही का एक निश्चित क्रम निर्धारित होना चाहिए तथा इसे राष्ट्रीय हितों से जुड़ी समस्या के रूप में देखा जाना चाहिए।
- आतंकवाद की रोकथाम के लिए समुद्री तटों, हवाई अड्डो, रेलवे, बस स्टेशनों सार्वजनिक स्थलों एवं लोकतंत्र के प्रतीकों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है।
- आतंकवादियों को अत्याधुनिक हथियार, उपकरणों एवं आर्थिक सहायता देने वाले देशों के विरूद्ध लामबद्ध होकर विरोध करने एवं आतंकवादियों को फण्ड स्त्रोत पर नियंत्रण की अति आवश्यकता है।
- राष्ट्रों की उच्चस्तरीय बैठक में सर्वप्रथम यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जिस आतंकवाद के विरुद्ध वे लड़ने जा रहे हैं वह किसी राष्ट्र विशेष की नहीं, बल्कि उनकी खुद की समस्या है। इससे वार्तालाप और कार्यवाही में पारदर्शिता आयेगी।
- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तीनों ही स्तरों पर आतंकवाद विरोधी नीति का निर्माण किया जाए।

8. BIBLIOGRAPHY :-

- चौधरी अमृता, 'भारतीय राष्ट्रवाद एवं आतंकवाद चुनौती और समाधान जम्मू-कश्मीर के विशेष संदर्भ में वर्ष अष्टम अंक प्रथम, जनवरी-जून, 2016
- शर्मा डॉ० मथुरालाल, नाटाणी प्रकाश नारायण, विदेश नीतियाँ कालेज बुक डिपो जयपुर वर्ष 2010
- दीक्षित जे०एन०ः भारत की विदेश नीति और आतंकवादः ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, नई
- पंत पुष्पेश 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धः टाटा मैग्राहिल नई दिल्ली, 2020
- डॉ. ममता मणि त्रिपाठी ,भारत में आतंकवाद कि समस्या: कारण अवाम निवारण ,भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स लेखेश्वर कॉम्प्लेक्स, (निकट अवध विश्वविद्यालय) फैजाबाद
- विश्वेश शर्मा,आतंकवाद एवं जन साझेदारी , पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
- अर्चना शर्मा & गुलाब चन्द्र ललित,भारत की आन्तरिक सुरक्षा को खतरे(एक नई रणनीति की आवश्यकता) मोहित पब्लिकेशन्स् नई दिल्ली